RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-05
May-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

पुराण संस्कृत साहित्य का विवेचन

निर्मला देवी

शोधार्थी, संस्कृत विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 25 May 2019

Keywords
पुराण संस्कृत साहित्य

ABSTRACT

भारतीय उपमहाद्वीप में विचार–विनिमय हेतु उपयोग में लायी गयी ज्ञात भाषाओं में सबसे प्राचीन संस्कृत भाषा है। जिसके सामान्यतः दो रूप हैं, वैदिक संस्कृत तथा लौकिक संस्कृत। वैदिक संस्कृत या प्राचीन संस्कृत का उपयोग वेद (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्वेद), पुराण, उपनिषद में देखने को मिलता है। पणिनि ऋषि से पूर्व की लगभग सभी रचना वैदिक संस्कृत में मिलती हैं। यह भारोपीय (इंडो–यूरोपीय) भाषा इरानियों के पवित्र ग्रन्थ अवेस्ता की भाषा के निकटवर्ती प्रतीत होती है। वैदिक साहित्य और लौकिक साहित्य का सेतु पुराणसाहित्य है। अत इस लेखन में पुराण संस्कृत साहित्य के विवेचन का सत्प्रयास है। संस्कृत सर्व भाषायां जननी अस्ति।

परिचय

पुराण, हिन्दुओं के धर्म–सम्बन्धी आख्यान ग्रन्थ हैं, जिनमें संसार – ऋषियों – राजाओं के वृत्तान्त आदि हैं। ये वैदिक काल के बहुत समय बाद के ग्रन्थ हैं, जो स्मृति विभाग में आते हैं। भारतीय जीवन–धारा में जिन ग्रन्थों का महत्त्वपूर्ण स्थान है उनमें पुराण प्राचीन भक्ति–ग्रंथों के रूप में बहुत महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। अठारह पुराणों में अलग–अलग देवी–देवताओं को केन्द्र मानकर पाप और पुण्य, धर्म और अधर्म, कर्म और अकर्म की गाथाएँ कही गयी हैं। कुछ पुराणों में सृष्टि के आरम्भ से अन्त तक का विवरण दिया गया है।

श्पुराणश का शाब्दिक अर्थ है, श्प्राचीनश या श्पुरानाश।ख्1, पुराणों की रचना मुख्यतः संस्कृत में हुई है, किन्तु कुछ पुराण क्षेत्रीय भाषाओं में भी रचे गए हैं।ख्2,ख्3, हिन्दू और जैन दोनों ही धर्मों के वाङ्मय में पुराण मिलते हैं।

पुराणों में वर्णित विषयों की कोई सीमा नहीं है। इसमें ब्रह्माण्डविद्या, देवी–देवताओं, राजाओं, नायकों, ऋषि–मुनियों की वंशावली, लोककथाएँ, तीर्थयात्रा, मन्दिर, चिकित्सा, खगोल शास्त्र, व्याकरण, खनिज विज्ञान, हास्य, प्रेमकथाओं के साथ–साथ धर्मशास्त्र और दर्शन का भी वर्णन है। ख्3, विभिन्न पुराणों की विषय–वस्तु में बहुत अधिक असमानता है। इतना ही नहीं, एक ही पुराण के कई–कई पाण्डुलिपियाँ प्राप्त हुई हैं जो परस्पर भिन्न–भिन्न हैं। ख्2, हिन्दू पुराणों के रचनाकार अज्ञात हैं और ऐसा लगता है कि कई रचनाकारों ने कई शताब्दियों में इनकी रचना की है। इसके विपरीत जैन पुराण हैं। जैन पुराणों का रचनाकाल और रचनाकारों के नाम बताये जा सकते हैं।

कर्मकाण्ड (वेद) से ज्ञान (उपनिषद्) की ओर आते हुए भारतीय मानस में पुराणों के माध्यम से भक्ति की अविरल धारा प्रवाहित हुई है। विकास की इसी प्रक्रिया में बहुदेववाद और निर्गुण ब्रह्म की स्वरूपात्मक व्याख्या से धीरे–धीरे मानस अवतारवाद या सगुण भक्ति की ओर प्रेरित हुआ।

पुराणों में वैदिक काल से चले आते हुए सृष्टि आदि संबंधी विचारों, प्राचीन राजाओं और ऋषियों के परंपरागत वृत्तांतों तथा कहानियों आदि के संग्रह के साथ साथ कल्पित कथाओं की विचित्रता और रोचक वर्णनों द्वारा सांप्रदायिक या साधारण उपदेश भी मिलते हैं। पुराण उस प्रकार प्रमाण ग्रंथ नहीं हैं जिस प्रकार श्रुति, स्मृति आदि हैं।

पुराणों में विष्णु, वायु, मत्स्य और भागवत में ऐतिहासिक वृत्तकृ राजाओं की वंशावली आदि के रूप में बहुत–कुछ मिलते हैं। ये वंशावलियाँ यद्यपि बहुत संक्षिप्त हैं और इनमें परस्पर कहीं–कहीं विरोध भी हैं, पर हैं बडे़ काम की। पुराणों की ओर ऐतिहासिकों ने इधर विशेष रूप से ध्यान दिया है और वे इन वंशावलियों की छानबीन में लगे हैं।

ऋग्वेदसंहिता – सबसे पुराना ग्रंथ

ऋग्वेदसंहिता के कतिपय मंडलों की भाषा संस्कृ तवाणी का सर्वप्राचीन उपलब्ध स्वरूप है। ऋग्वेदसंहिता इस भाषा का पुरातनतम ग्रंथ है। यहाँ यह भी स्मरण रखना चाहिए कि ऋग्वेदसंहिता केवल संस्कृतभाषा का प्राचीनतम ग्रंथ नहीं है – अपितु वह आर्य जाति की संपूर्ण ग्रंथराशि में भी प्राचीनतम ग्रंथ है। दूसरे शब्दों में, समस्त विश्ववाङ्मय का वह (ऋक्संहिता) सबसे पुरातन उपलब्ध ग्रंथ है। दस मंडलो के इस ग्रंथ का द्वितीय से सप्तम मंडल तक का अंश प्राचीनतम और प्रथम तथा दशम मंडल अपेक्षाकृत अर्वाचीन है। ऋग्वेदकाल से लेकर आज तक उस भाषा की अखंड और अविच्छिन्न परंपरा चली आ रही है। ऋक्संहिता केवल भारतीय वाङ्मय की ही अमूल्य निधि नहीं है – वह समग्र आर्यजाति की, समस्त विश्ववाङ्मय की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विरासत है।

विश्व की प्राचीन प्रागैतिहासिक संस्कृतियों को जो अध्ययन हुआ है, उसमें कदाचित् आर्यजाति से संबद्ध

RRIJM 2015, All Rights Reserved

अनुशीलन का विशिष्ट स्थान है। इस वैशिष्ट्य का कारण यही ऋग्वेदसंहिता है। आर्यजाति की आद्यतम निवासभूमि, उनकी संस्कृति, सभ्यता, सामाजिक जीवन आदि के विषय में अनुशीलन हुए हैं ऋक्संहिता उन सबका सर्वाधिक महत्वपूर्ण और प्रामाणिक स्रोत रहा है। पश्चिम के विद्वानों ने संस्कृत भाषा और ऋक्संहिता से परिचय पाने के कारण हो तुलनात्मक भाषाविज्ञान के अध्ययन को सही दिशा दी तथा आर्यभाषाओं के भाषाशास्त्रीय विवेचन में प्रौढ़ि एवं शास्त्रीयता का विकास हुआ। भारत के वैदिक ऋषियों और विद्वानों ने अपने वैदिक वाङ्मय को मौखिक और श्रुतिपरंपरा द्वारा प्राचीनतम रूप में अत्यंत सावधानी के साथ सुरक्षित और अधिकृत अनाए रखा। किसी प्रकार के ध्वनिपरक, मात्रापरक यहाँ तक कि स्वर (ऐक्सेंट) परक परिवर्तन से पूर्णतरू बचाते रहने का निरूस्वार्थ भाव में वैदिक वेदपाठी सहस्रब्दियों तक अथक प्रयास करते रहे। ष्वेदष शब्द से मंत्रभाग (संहिताभाग) और ष्ब्राह्मणष का बोध माना जाता था। ष्ब्राह्मणष भाग के तीन अंश – (1) ब्राह्मण, (2) आरण्यक और (3) उपनिषद् कहे गए हैं। लिपिकला के विकास से पूर्व मौखिक परंपरा द्वारा वेदपाठियों ने इनका संरक्षण किया। बहुत सा वैदिक वाङ्मय धीरे–धीरे लुप्त हो गया है। पर आज भी जितना उपलब्ध है उसका महत्व असीम है। भारतीय दृष्टि से वेद को अपौरुषेय माना गया है। कहा जाता है, मंत्रद्रष्टा ऋषियों ने मंत्रों का साक्षात्कार किया। आधुनिक जगत् इसे स्वीकार नहीं करता। फिर भी यह माना जाता है कि वेदव्यास ने वैदिक मंत्रों का संकलन करते हुए संहिताओं के रूप में उन्हें प्रतिष्ठित किया। अतरू संपूर्ण भारतीय संस्कृति वेदव्यास की युग–युग तक ऋणी बनी रहेगी।

इसका रचनाकाल ईसा से 5500–5200 पूर्व माना जाता है। भारतीय विद्वानों ने वेदों के रचनाकाल का आरंभ ४५०० ई.पू. से माना है परन्तु यूरोपीय विद्वान इनकी रचना का काल ईसा से २०००–११०० पूर्व मानते है।

वेद, वेदांग, उपवेद

यहाँ साहित्य शब्द का प्रयोग ष्वाङ्मयष के लिए है। ऊपर वेद संहिताओं का उल्लेख हुआ है। वेद चार हैं– ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। इनकी अनेक शाखाएँ थीं जिनमें बहुत सी लुप्त हो चुकी हैं और कुछ सुरक्षित बच गई हैं जिनके संहिताग्रंथ हमें आज उपलब्ध हैं। इन्हीं की शाखाओं से संबद्ध ब्राह्मण, अरण्यक और उपनिषद् नामक ग्रंथों का विशाल वाङ्मय प्राप्त है। वेदांगों में सर्वप्रमुख कल्पसूत्र हैं जिनके अवांतर वर्गों के रूप में और सूत्र, गृह्यसूत्र और धर्मसूत्र (शुल्बसूत्र भी है) का भी व्यापक साहित्य बचा हुआ है। इन्हीं की व्याख्या के रूप में समयानुसार धर्मसंहिताओं और स्मृतिग्रंथों का जो प्रचुर वाङ्मय बना, मनुस्मृति का उनमें प्रमुख स्थान है। वेदांगों में शिक्षा–प्रातिशाख्य, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छंद शास्त्र से संबद्ध ग्रंथों का वैदिकोत्तर काल से निर्माण होता रहा है। अब तक इन सबका विशाल साहित्य उपलब्ध है। आज ज्योतिष की तीन शाखाएँ–गणित, सिद्धांत और फलित विकसित हो चुकी हैं और भारतीय गणितज्ञों की विश्व की बहुत सी मौलिक देन हैं। पाणिनि और उनसे पूर्वकालीन तथा परवर्ती वैयाकरणों द्वारा जाने कितने व्याकरणों की रचना हुई जिनमें पाणिनि का व्याकरण–संप्रदाय 2500 वर्षों से प्रतिष्ठित माना गया और आज विश्व भर में उसकी महिमा मान्य हो चुकी है। पाणिनीय व्याकरण को त्रिमुनि व्याकरण भी कहते हैं, क्योंकि पाणिनि, कात्यायन और पतंजलि इन तीन मुनियों के सत्प्रयास से यह व्याकरण पूर्णता को प्राप्त किया। यास्क का निरुक्त पाणिनि से पूर्वकाल का ग्रंथ है और उससे भी पहले निरुक्तिविद्या के अनेक आचार्य प्रसिद्ध हो चुके थे। शिक्षाप्रातिशाख्य ग्रंथों में कदाचित् ध्वनिविज्ञान, शास्त्र आदि का जितना प्राचीन और वैज्ञानिक विवेचन भारत की संस्कृत भाषा में हुआ है– वह अतुलनीय और आश्चर्यकारी है। उपवेद के रूप में चिकित्साविज्ञान के रूप में आयुर्वेद विद्या का वैदिकाल से ही प्रचार था और उसके पंडिताग्रंथ (चरकसंहिता, सुश्रुतसंहिता, भेडसंहिता आदि) प्राचीन भारतीय मनीषा के वैज्ञानिक अध्ययन की विस्मयकारी निधि है। इस विद्या के भी विशाल वाङ्मय का कालांतर में निर्माण हुआ। इसी प्रकार धनुर्वेद और राजनीति, गांधर्ववेद आदि को उपवेद कहा गया है तथा इनके विषय को लेकर ग्रंथ के रूप में अथवा प्रसंगतिर्गत सन्दर्भों में पर्याप्त विचार मिलता है।

प्राचीन भारतीय सभ्यता, संस्कृति, समाज, सज्य, आदर्श, व्यवहार, अध्यात्म, धर्म नीति, आदि के समुज्जवल प्रकाशस्तम्भ होने के कारण 'रामायण' और 'महाभारत' को इतिहास माना जाता है। परम्परानुसार 'रामायण' को आदिकाव्य माना जाता है, किन्तु वैदिक धर्म का व्यवहारिक स्वरूप इसमें दृष्टिगत होने से, इसे भी इतिहास मानना संगत है राजशेखर का मत है कि इतिहास दो प्रकार का होता है – परिक्रिया और पुराकल्प। परिक्रिया का नायक एक ही व्यक्ति होता है, जैसे–

1. तत्र ब्रह्मे तिहासमिश्रमृङमिश्रं गाथामिश्रं भवति–निरुक्त 4ध्6
2. ऋग्वेद भगवोऽध्येमि यजुर्वेदं सामवेदमथ इतिहासपुराणं वेदानां वेदम–छान्दोग्य 7ध्1

'रामायण'। पुराकल्प में अनेक नायक होते हैंय जैसे 'महाभारत'। इस प्रकार राजेश्वर के अनुसार 'रामायण' और 'महाभारत' दोनों ही इतिहास ग्रन्थ हैं। उनका कथन है–

''परिक्रिया पुराकल्परू इतिहास–गतिर्द्विधा
स्यादेकनायका पूर्वा द्वितीया बहुनायका।''

यह भी यथार्थ है कि आधुनिक परिवेश में इतिहास के लिए जो मापदण्ड हैं, उन पर 'रामायण' और 'महाभारत' खरे नहीं उतरते हैं। वास्तव में, संस्कृति साहित्य के इतिहास का लेखन पाश्चात्य चिन्तकों ने आरम्भ किया, ऐसा मानने में कोई

आपत्ति नहीं होनी चाहिए। उसी दिशा में आगे चलकर भारतीय मनीषियों ने भी संस्कृति साहित्य के इतिहास की रचना विस्तार से की। इस संबंध में आचार्य बलदेव उपाध्याय का अवदान सर्वाधिक स्तुत्य है। इस प्रसंग में हिन्दी में रचित एवं उपलब्ध अन्य उल्लेखनीय ग्रन्थ हैं–

स्व. पं. चन्द्रशेखर पाण्डेय द्वारा रचित–साहित्य की रूप रेखा, डॉ. सूर्यकान्त की पुस्तक है– 'संस्कृत वाङ्मय का विवेचनात्मक इतिहास', डॉ. वचनदेव कुमार प्रणीत है–'संस्कृत साहित्येतिहासरू' तथा आचार्य रामचन्द्र मिश्र निमित्त 'संस्कृ तसाहित्येतिहासरू'। डॉ. भोलाशंकर व्यास रचित 'संस्कृत कवि–दर्शन' भी इस दृष्टि से बहुत उपयोगी है।

प्रथम प्रलम्ब पुराण

इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत।
विभेत्यल्पश्रुतोद्वेदो मामयं प्रहरिष्यति।।

संस्कृत वाङ्मय को दो भागों में विभक्त किया जाता है–वैदिक साहित्य और लौकिक साहित्य। इन दोनों को जोड़ने की कड़ी है–पुराण साहित्य। जब वेदों के अर्थ सामान्य जन के लिए दुर्बोध होने लगे, तब वेदों के सुलभ अर्थ–ज्ञान के लिए वेदांगों एवं पुराणों की रचना की जाने लगी।

भारतीय साहित्य में वेदों के समान ही पुराणों को भी प्राचीन बताया गया है। अथर्वसंहिता के अनुसार ऋक, साम, छन्द, पुराण, और यजुरू सब एक साथ आविर्भूत हुए।1 'शतपथ' ब्राह्मण और 'बृहदारण्यक' उपनिषद में कहा गया है कि जैसे गीली लकड़ी का आग से धुआँ निकलता है, इसी प्रकार इस महाभूत से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वांगरस, इतिहास, पुराण, विद्या, उपनिषद, श्लोक, सूत्र, अनुव्याख्यान और व्याख्यान निरूश्वास रूप में उद्धत हुए।2

ब्रह्माण्डपुराण में यहाँ तक कहा गया है कि सर्वप्रथम ब्रह्मा ने पुराणों का स्मरण किया। इसकी घोषणा है कि सांगोपांग वेद का अध्ययन करने पर भी पुराणों के ज्ञान से रहित है, वह तत्त्वज्ञ नहीं कहा जा सकता, क्योंकि वेद का वास्तविक स्वरूप पुराणों में ही वर्णित है।3

ब्रह्माण्डपुराण के उपर्युक्त तथ्य का उल्लेख करते हुए म.प. गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी 'पुराणों की अनादिता' इस निबन्ध शीर्षक में लिखते हैं कि कलियुग के आरम्भ में मनुष्यों की स्मृति और विचार–बुद्धि की दुर्बलता को देखकर भगवान् वेद व्यास ने जहाँ वेद को चार संहिताओं में विभाजित किया, वहीं पुराणों को भी संक्षिप्त कर अठारह विधाओं में बांट दिया गया।4

इतिहास – पुराण में अन्तर

पुराण ग्रन्थों में इतिवृत्तों की अधिकता के कारण उनको इतिहास ही समझा जाता है, किन्तु ये दोनों स्वतन्त्र विषय के रूप में कहीं–कहीं वर्णित हैं। बृहदाण्यक उपनिषद् के शंकर भाष्य रू

1. ऋच सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह। अथर्व.
2. स यथाऽऽर्द्रैधाग्नेरभ्याहितस्य पृथग्धूमा विनिश्वरन्त्येवं वा अरेऽस्य महतो भूतस्य निरूश्वसितमेतद् यदृग्वेदो यजुर्वेद सामवेदोअथर्वांगिरस
   इतिहासः पुराणं विद्या उपनिषदः श्लोकाः...सर्वाणि चभूतानि अस्यैवैतानि सर्वाणि निरूश्वसितानिष बृहदा
3. ब्रह्माण्ड पुराण
4. साप्ताहिक हिन्दुस्तान

में लिखा है कि वेदों में वर्णित देवासुरसंग्राम तथा उर्वशी–पुरुरवा का संवाद आदि इतिहास हैं। 'उर्वशी ह्याप्सरा' इत्यादि ब्राह्मण ही इतिहास है। ''आरम्भ में यह असत् ही था–'' इत्यादि वाक्य पुराण है।1 सायण भी कहते है कि–जगत् की प्रथमावस्था से लेकर सृष्टि प्रक्रिया का विकास उपस्थित करने वाले अंश पुराण हैं।

पुराणों के लक्षण

भारतीय वाङ्मय में पुराणों का गौरवपूर्ण स्थान है। 'पुराण' शब्द की व्युत्पत्ति अनेक प्रकार से दी गई है। निरुक्तकार यास्क कहते हैं–

पुराणं कस्मात् ? पुरा नवं भवति।
अर्थात् अतीत काल में यह नया होता है।
वायुपुराण में कहा है–
यस्मात् पुरा हि अनति इदं पुराणम्।

'पुराण' शब्द की एक व्युत्पत्ति 'पुरणात् पुराणम्' भी है। इसका अभिप्राय है कि वेदार्थ के पूरण करने के कारण ही इन ग्रन्थों को 'पुराण' कहा गया। इसी व्युत्पत्ति के आधार पर जीव गोस्वामी पुराण को वेद के समान अपौरुषेय बताते हैं।

पुराणों का लक्षण इस प्रकार किया गया है–
सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितञ्चौव पुराणं पञ्च लक्षणम्।

अर्थात् पुराणों में पाँच बातों का वर्णन होना चाहिए–सृष्टि की उत्पत्ति, सृष्टि का संहार, सृष्टि की आदिवंशावली, मन्वतर अर्थात् विविध मनुओं की कालावधि तथा वंशानुचरित (सूर्य तथा चन्द्र वंशों का इतिहास)

इस समय उपलब्ध पुराणों में इन विषयों के अतिरिक्त बहुत से अन्याय विषय–स्तुति, उपवास, उत्सव, पर्व एवं तीर्थ आदि का अत्यन्त विस्तृत वर्णन पाया जाता है। केवल 'विष्णु पुराण' में ही यह सभी लक्षण दीख पड़ते है। इससे यह समझा जाता है कि प्राचीन काल के सभी पुराणों में उपर्युक्त दृष्टिगत होते थे, किन्तु कालान्तर में ऐसे विषय भी उनमें जोड़ दिए गए जिनका उनसे कोई संबंध नहीं है।

भारतीय परम्परा में पुराणों की संख्या निर्विवाद रूप से अठारह है।

1. 'इतिहास इत्युर्वशीपुरुरवसोरू संवादादिरू–उर्वशी ह्याप्सरा इत्यादि ब्राह्मणमेव। पुराणम्–असद्वा इदमग्र आसी।'

2. ''जगतरू प्रागवस्थामनुक्रम्य सर्गप्रतिपादकं वाक्यजातं पुराणम्'' ।दृ ऐतरेय ब्राह्मण की अनुक्रमणिका

3. मद्वयं भद्वयं चौव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्।
अनापल्लिंग–कूस्कानि पुराणानि प्रचक्षते।।

सन्दर्भ

1. संस्कृत के अनेकानेक ग्रन्थ, देवनागरी में
2. वैदिक साहित्य, महर्षि वैदिक विश्वविद्यालय – पीडीएफ प्रारूप, देवनागरी
3. गौडीय ग्रन्थ–मन्दिर पर सहस्रों संस्कृत ग्रन्थ, बलराम इनकोडिंग में
4. सहस्रों संस्कृत ग्रन्थ, अनेक स्रोतों से, अनेक इनकोडिंग में

RRIJM 2015, All Rights Reserved